शिशु स्तनपान की मध्य प्रदेश में स्थिति -2017

स्थिति ,चुनौतियाँ और प्रभावित करने वाले कारक पर एक अध्ययन

Child Rights Observatory Madhya Pradesh

Seven Hills School Premise ,E-6 Arera Colony Bhopal

Phone 0755-2560466,Email cromp.in@gmail.com

विषय

1-शिशु स्तनपान से बच्चों के स्वास्थ पर प्रभाब

2- शिशु स्तनपान प्रचार और जागरूकता के लिए वैश्विक पहल

3 शिशु स्तनपान विकल्प, बोतल से पिलाना को बेचना तथा बोतल बंद शिशु आहार (उत्पादन,नियंत्रण,एवं वितरण)अधिनियम 1992 और संशोधित अधिनियम 2003 के प्रमुख प्राबधान और क्रियान्वयन की स्थिति

4 शिशु स्तनपान के सम्बन्ध में प्रदेश के जिलों की स्थिति

5 शिशु स्तनपान के सम्बन्ध में प्रदेश के जिलों की स्थिति

6 शिशु स्तनपान स्थिति ,चुनौतियाँ और प्रभावित करने वाले कारक पर अध्ययन,एक विश्लेषण

7 शिशु स्तनपान की स्थिति में सुधार के चाइल्ड राइट्स ऑब्जर्वेटरी मध्य प्रदेश की पहल

8 निष्कर्ष

9 संदर्भ

10 परिशिष्ठ 1 से 4

भाग-1-प्रस्तावना

1-शिशु स्तनपान से बच्चों के स्वास्थ पर प्रभाब - माँ का दूध बच्चे के लिए अनमोल उपहार है। नवजात शिशु और बच्चे को पर्याप्त सुरक्षा, स्नेह तथा पोषण की आवश्यकता होती है। स्तनपान उन सभी को पूरा करता है। मां का दूध बच्चे के सम्पूर्ण विकास के लिए पोषण का सबसे अच्छा स्रोत होता है तथा मां के दूध का कोई अन्य विकल्प नहीं है। डब्ल्यूएचओ ने अनुशंसा की है कि माँ का पीला व गाढ़ा कोलोस्ट्रम वाला दूध नवजात शिशु के लिए एकदम सटीक आहार है। स्तनपान जन्म के तुरंत बाद एक घंटे के भीतर शुरू किया जाना चाहिए। बच्चे को लगातार स्तनपान के साथ छह महीने की अवस्था तक स्तनपान कराने की सिफ़ारिश की जाती है। शिशु को छह महीने की अवस्था के बाद और दो बर्ष या उससे अधिक समय तक स्तनपान कराने के साथ साथ पोष्टिक पूरक आहार दिया जाना चाहिए। यदि बच्चा बार बार दूध पीता है तो स्तन में ज्यादा दूध बनेगा। माँ का दूध दिन और रात में कम से कम 8 से 10 बार शिशु को पिलाने से दूध की मात्रा में बढोत्तरी होती है। माँ के दूध में बच्चे के लिए आवश्यक प्रोटीन, वसा, कैलोरी, लैक्टोज, विटामिन, लोहा, खनिज, पानी और एंजाइम पर्याप्त मात्रा में होते है। माँ का दूध पचाने में त्वरित और आसान होता है। यह बच्चे की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, जो कि भविष्य में उसे कई तरह के संक्रमणों से सुरक्षित करता है।यह बच्चे के मस्तिष्क के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किफ़ायती और संक्रमण से मुक्त है। स्तनपान बच्चे और मां के बीच भावनात्मक बंधन को बढ़ाता है। साथ ही यह स्तन व डिम्बग्रंथि के कैंसर की संभावना को कम करता है। यह प्रसव के बाद खून बहने और एनीमिया की संभावना को कम करता है। यह माँ को अपनी पुरानी शारीरिक संरचना वापिस प्राप्त करने में सहायता करता हैं। स्तनपान कराने वाली माताओं के बीच मोटापा सामान्यत जाता है।

स्तनपान से बच्चों की संक्रामक रोगों से मौत को 88 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। इससे बच्चों में डायरिया के खतरों को 54 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। वहीँ स्वांस सम्बंधित रोगों को 32 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है परन्तुं दुर्भाग्यवस एक अनुमान के मुताविक देश में बर्ष 2015 में बारह लाख बच्चों की मृत्यु हुई जो कि दुनिया में कुल हुईं बच्चों की मौत का 20 प्रतिशत है। इस दर के साथ भारत दुनिया में शीर्ष स्थान पर है। उनकी मौत उन बीमारियों से होती हैं जिनकी आसानी से रोकथाम की जा सकती है।

2-शिशु स्तनपान प्रचार और जागरूकता के लिए वैश्विक पहल

स्तनपान के लाभ के प्रचार के बावजूद, स्तनपान की व्यापकता और अवधि कई देशों में अभी भी अंतरराष्ट्रीय मानक की तुलना में कम कर रहे हैं। विशेष रूप से जीवन के पहले छह महीनों के लिए स्तनपान की सिफारिश की जाती है। यूनाइटेड नेशनस द्वारा सितम्बर 2015 में बर्ष 2030 तक गरीबी हटाने, भुखमरी मिटाने और समृद्धि सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सतत विकास के 17 लक्ष्य तय किये है। इन लक्ष्यों को हासिल करने में स्तनपान बहुत ही मददगार साबित हो सकता है।

उचित स्तनपान और पोषण के निम्न आयाम हैं

1- जन्म के एक घंटे के अन्दर स्तनपान
2- जन्म बाद में 6 माह तक लगातार केबल माँ का दूध
3-शिशु को स्तनपान के साथ ठोस और अर्द्ध ठोस आहार
4-दो साल तक के बच्चों को स्तनपान के साथ बच्चों को पर्याप्त आहार

स्तनपान की जागरूकता के लिए विश्व स्तनपान सप्ताह , विश्वभर के बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार और स्तनपान को प्रोत्साहित करने हेतु एक सौ सत्तर देशों से अधिक देशों में प्रतिवर्ष अगस्त माह के पहले सप्ताह में विश्व स्तनपान सप्ताह मनाया जाता है। **वर्ल्ड अलाइंस फॉर ब्रैस्टफीडिंग एक्सन** संस्थान शिशु स्तनपान की जगरूकता को बढ़ाबा देने के लिए हर बर्ष विषय तय करता है। बर्ष 2017 के लिए संस्थान ने निम्न चार मुख्य लक्ष्य तय किये हैं।

1- **सूचित करना** - स्तनपान के चार विषय क्षेत्रों पर मिलकर काम करने के महत्त्व पर समझ बताना।
2-**एंकर:** अपनी भूमिका को समझकर यह जानना की अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करते हुए आप क्या बदलाब ला सकते हैं।
3-**संलिप्तता-** अन्य लोगों से मिलकर उन क्षेत्रों को समझना जिन पर मिलजुलकर कार्य कर सकें।
4 **प्रेरित करना-** बर्ष 2030 तक सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलजुलकर कार्य करना।

3-शिशु स्तनपान को बढ़ाबा देने के लिए सरकारी पहल

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी एक्ट 2005 की धारा 27 में यह प्राबधान है कि मजदूरों के बच्चों के आराम के लिए कार्य स्थल पर अन्य सुबिधाओं के साथ एक सेड भी होगा। यह प्राबधान मजदूर माँ को स्तनपान में सहायक है। मनरेगा में मजदूरी दर टास्क रेट के आधार पर होती है और माँ अपने बच्चे के स्तनपान के लिए आसानी से समय निकाल सकती है।

बर्ष 2015 एक अदालती फैसले के बाद प्रदेश सरकार ने नौकरी पेशा महिलाओं के लिए में बाल देखभाल अवकाश को 730 दिन कर दिया गया। जो पूर्व में 180 दिवस ही था। The Maternity Benefit Act, 1961 संशोधित अधिनियम 2017 करते हुए, यह प्राबधान किया कर्मचारीयों को 26 सप्ताह का मातृत्व अवकाश अवकाश दिया जाएगा।

स्वास्थ एवं परिबार कल्याण विभाग द्वारा अगस्त 2016 से राष्ट्रीय स्वास्थ मिशन के तहत शिशु स्तनपान प्रोत्साहन, सुरक्षा और सहायता के लिए MAA Mothers' Absolute Affection(MAA) कार्यक्रम लागू किया है। इस कार्यक्रम मुख्य उद्देश्य (1) जागरूकता गतिविधियों के द्वारा स्तनपान के लिए एक सक्रिय वातावरण बनाना है, स्तनपान के सर्बोत्तम अभ्यास को बढ़ाबा देने के लिए गर्भवती महिलाओं, धात्री माताओं,परिबार के सदस्यों और समाज को लक्ष्यित करना है। (2) दुग्धपान के लिए सहायक सेवाओं को जन स्वास्थ सुबिधाओं के द्वारा और कुशल स्वास्स्थ कार्यकर्ताओं के माध्यम से सुदृढ़ करना है। (3) उन स्वास्थ्य सेवाओं और सुबिधाओं के साथ दुग्धपान प्रक्रिया प्रबंधन को प्रोत्साहन और पहचान दिलाना जिससे स्तनपान की दर बढ़ती दिखाती हैं।

4- देश में शिशु दुग्ध विकल्प और बोतल बंद शिशु आहार से सम्बंधित क़ानून

देश में शिशु दुग्ध विकल्प और शिशु आहार के उत्पादन, बिक्री और नियंत्रण के लिए क़ानून बनाया जिसको "शिशु स्तनपान विकल्प, बोतल से पिलाना को बेचना तथा बोतल बंद शिशु आहार (उत्पादन,नियंत्रण,एवं वितरण)अधिनियम 1992 और संशोधित अधिनियम 2003 के प्रमुख प्राबधान और क्रियान्वयन की स्थिति नाम से जाना जाता है(**आईएमएस एक्ट**) इसके प्रमुख प्राबधान निम्नानुसार हैं।

बच्चों का आहार बनाने वाली कम्पनियों यदि निम्न बातें करती हैं तो यह उनके द्वारा आईएमएस एक्ट का उल्लंघन होगा

1. दो साल तक के बच्चों के लिए किसी भी नाम से बच्चों के आहार का प्रचार करना।
2. छ: माह तक के बच्चों के लिए किसी भी आहार के उपयोग का प्रचार करना।
3. इन आहारों का किसी भी माध्यम से विज्ञापन करना जैसे कि, टेलीविजन, न्यूज पेपर, मेगजीन, पत्रिका, एसएमएस, ईमेल, रेडियो, पर्चाट आदी।
4. ऐसे उत्पादों अथवा उनके सेम्पल का लोगों में वितरण करना।
5. किसी भी व्यक्ति के माध्यम से गर्भवती अथवा धात्री महिलाओं से सम्पर्क करना।
6. किसी को भी किसी भी तरह का प्रलोभन देना जैसे कि उपहार या टाईड सेल्स।
7. सूचना और शिक्षण सामग्री का माताओं अथवा परिजनों में वितरण (वे शिक्षण सामग्री का हेल्थ प्रोफेशनल्स जैसे कि डाक्टर, नर्स आदी को वितरण कर सकते हैं बशर्ते इसमें आईएमएस एक्ट 2003 की धारा 7 में दी गई जानकारी शामिल हो। शिक्षण सामग्री में सिर्फ तथ्यात्मक जानकारी ही होनी चाहिये और इसमें कम्पनी के उत्पाद का प्रचार भी नही होना चाहिये।)
8. टीन एवं गत्ते के डिब्बे अथवा उनसे संबंधित लीफलेट देना जिसमें माँ अथवा बच्चे का फोटो हो या फिर इस तरह के कार्टून हो।
9. अस्पतालों, नर्सिंगहोम अथवा दवाओं की दुकानों में विज्ञापनपत्र अथवा पोस्टर के माध्यम से इन उत्पादों का प्रचार करना।
10. इन उत्पादों का प्रचार करने के लिए डाक्टर अथवा नर्स को राशि देना।

11. माँ अथवा परिजनों में इन उत्पादों को बच्चों को खिलाने के तरीको का प्रदर्शन करना। हालाँकि डाक्टर माँ के सामने इनका प्रदर्शन कर सकता है।
12. इन उत्पादों का प्रचार करने के लिए डाक्टर अथवा नर्स को उपहार देना।
13. डाक्टर, नर्स अथवा आईएपी, आईएमए, एनएनएफ जैसे संघों को लाभ देना। उदाहरण के लिएः सेमीनार, मीटिंग, कॉन्फ्रेंस, प्रतियोगिता का आयोजन करने के लिए फंड देना अथवा शिक्षण के लिए फीस, प्रोजेक्ट अथवा रिसर्च कार्य एवं टूर को स्पांसर करना।
14. इन उत्पादों की बिक्री पर कर्मचारियों के लिए बिक्री वाल्यूम के आधार पर कमीशन तय करना।

5- देश में आईएमएस एक्ट के क्रियान्वयन की स्थित

इन प्राबधानों का देश में उलंघन के विषय पर ,दिसम्बर 2016 में इकोनॉमिक्स टाइम्स अपनी रिपोर्ट में यह उल्लेख किया कि देश में ब्रेस्टफीडिंग प्रोमोशन नेटवर्क आफ इंडिया के अनुसार देश में बेबी फूड इंडस्ट्रीज् के द्वारा 2008 से 2016 के बीच कम से कम 54 बार आई.एम.एस एक्ट का उल्लंघन किया गया। आई.एम.एस एक्ट का उल्लंघन करने वालों में देश की प्रमुख कम्पनियां जैसे Nestle, Abbot, Heinz और Danone भी शामिल हैं। बीपीएनआई द्वारा एक आनलाईन सर्वे करवाया गया जिसमें प्रायवेट अस्पतालों में प्रसव करवाने वाली 950 महिलाओं का साक्षात्कार किया गया। इनमें से आधी महिलाओं ने बताया कि इन अस्पतालों में उनके बच्चों को आर्टिफिशियल बेबी मिल्क दिया गया और ऐसी माताओं में से दो तिहाई ने बताया ऐसा बिना उनकी स्विकृति के किया गया। माताओं ने यह भी बताया कि अस्पतालों में कार्य कर रहे स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने भी बच्चे को स्तनपान कराने की क्षमता के बारे में उनके आत्मविश्वास को हतोत्साहित किया। रिपोर्ट के अनुसार बच्चों के आहार बानाने बाली कंपनियों द्वारा उत्पादकों के प्रचार और क़ानून के उल्लंघन से देश के 1.4 करोड़ बच्चो का स्वास्थ खतरें में हैं।

6-स्तनपान और उससे जुड़े मुद्दों पर प्रदेश की स्थिति।

राष्ट्रीय परिवार और स्वास्थ सर्वेक्षण 2015-16 के अनुसार मध्य प्रदेश में 34.5 प्रतिशत शिशुओं को जन्म के एक घंटे के अन्दर स्तनपान कराया जाता है। देश के 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मध्य प्रदेश 29 स्थान पर है। **(परिशिष्ठ-1)** देश में संस्थागत प्रसव की दर 78.9 प्रतिशत है और मध्य प्रदेश में यह दर 80.8 प्रतिशत हैं। प्रदेश के शहरी क्षेत्र में संस्थागत प्रसव की दर 93.8 तो ग्रामीण क्षेत्र में यह दर 76.4 प्रतिशत है। आदर्श स्थिति वह होती है जहाँ बच्चे का जन्म हो और उसके बाद पोषण और आहार सम्बंधित संकेताकों में या आसन भाषा में कहें तो सुबिधाओं में बढोतरी होनी चाहिए जो उसके विकास में बहतर भूमिका निभा सके शिशु को जन्म बाद में 6 माह तक लगातार केबल माँ का दूध ही दिया जाना चाहिए लेकिन प्रदेश में 58.2 प्रतिशत बच्चों को ही माँ का दूध दिया जाता है, देश के 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मध्य प्रदेश 20 वे स्थान पर है।**(परिशिष्ठ-2)** शिशु को जन्म के बाद लगातार माँ का दूध मिले इसके लिए प्रयास भी किये गए हैं।

माँ के दूध के साथ तरल या कम ठोस आहार और सम्पूर्ण आहार जो उम्र के अनुसार पोष्टिक आहार देने में भारी कमी हैं। बच्चों की उम्र के साथ पोषण की मात्रा में बढोतरी होनी चहिये जबकि देश और प्रदेश में यह दर बहुत कम हैं। ज्यों ज्यों बच्चे की उम्र बढती है बच्चे पोषण के मामलों में हाशिये पर चले जातें हैं। (ग्राफ-1)

ग्राफ-1 संस्थागत प्रसव शिशु स्तनपान और आहार की स्थित-2015-16

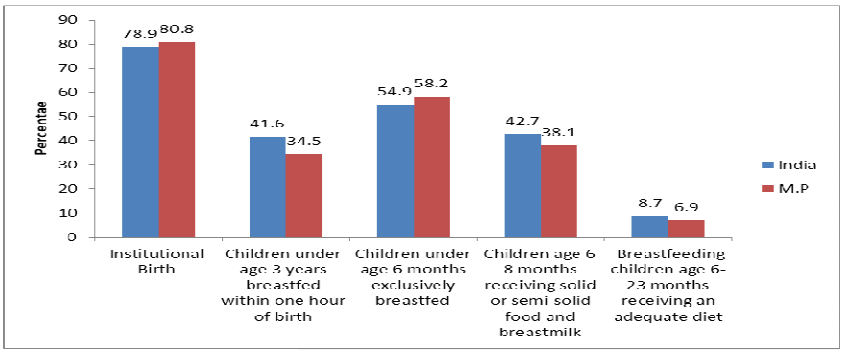

श्रोत- एन.एफ.एच.एस-4

स्वास्थ और परिवार कल्याण विभाग मध्य प्रदेश के हेल्थ बुलेटिन के अनुसार प्रदेश में बर्ष 2015-16- में 13.76 लाख जीवित बच्चों जन्म हुआ, यदि प्रदेश में बच्चों के जन्म के आंकडे के साथ राष्ट्रीय परिवार और स्वास्थ सर्वेक्षण 2015-16 के शिशु स्तनपान और शिशु आहार से जुड़े तथ्यों से तुलना करने हैं तो पातें हैं कि प्रदेश में लगभग **नो लाख बच्चों** को बच्चों को जन्म के एक घंटें के अन्दर माँ का दूध नहीं मिल पाया, वहीं **पांच लाख** से अधिक बच्चों को जन्म से छ: माह तक लगातार माँ का दूध नसीब नहीं होता है। प्रदेश में 6 से 8 माह के शिशु को स्तनपान के साथ ठोस और अर्द्ध ठोस आहार से लगभग **आठ लाख पचास हजार** से अधिक बच्चे बंचित रह जाते हैं। यह बहुत ही चिंता का विषय है कि प्रदेश में 6 से 23 माह के **बारह लाख पिच्यासी हजार** बच्चों को पर्याप्त आहार नहीं मिल पाता।

7-शिशु स्तनपान के मामलों में प्रदेश के जिलों की स्थित

राजधानी होने के अलाबा भोपाल जिला मुख्यालय में प्रदेश के जनप्रतिनिधि और नौकरशाह द्वारा शिशु स्वास्थ देखभाल और पोषण की नीतियाँ बनाते हैं और उसके क्रियान्वयन के लिए रणनीति तय करते हैं। जन्म के एक घंटे के अन्दर माँ का दूध मिलाने के मामले में भोपाल जिला प्रदेश के 50 जिलों में 49 वे स्थान पर है जहाँ महज 18.3 प्रतिशत बच्चों को ही जन्म के एक घंटे के अंदर मान का दूध मिला पाता हे। भोपाल जिले में 80 प्रतिशत से अधिक शहरी आबादी है जहाँ सभी तमाम चिकत्सीय सुबिधायें मौजूद हैं। भोपाल जिले के शहरी क्षेत्र में यह दर निराश करने वाली हैं जहाँ महज 14.6 प्रतिशत बच्चों को ही जन्म के एक घंटे के अन्दर माँ का दूध मिला पाता है। प्रदेश के जो जिले आर्थिक रूप से मजबूत माने जातें हैं जहाँ चिकत्सीय सुबिधा मौजूद है के साथ बहतर अधोसंरचना मौजूद हैं उन जिलों में स्थिति

चिंताजनक हैं। जन्म के एक घंटे के अन्दर स्तनपान में प्रदेश के पांच शीर्ष और पिछड़े जिले **तालिका -1** में हैं। प्रदेश के सभी जिलों की स्थित परीशिष्ट -3 में देखें।

तालिका -1 जन्म के एक घंटे के अन्दर स्तनपान में प्रदेश के दस शीर्ष और दस पिछड़े जिले-2015-16

क्रमांक	पिछड़े		शीर्ष	
	जिला का नाम	रैंक	जिला का नाम	रैंक
1	Khargone-(17.8%)	50	Shahdol(56.6%)	1
2	Bhopal(18.3%)	49	Mandla(53.0%)	2
3	Ujjain(19.0%)	48	Blaghat (52.2%)	3
4	Ratlam(19.1%)	47	Sidhi(49.3%)	4
5	Dhar(20.9%)	46	Betul(49.2%)	5

श्रोत- एन.एफ.एच.एस-4

8 प्रदेश में बच्चों को लगातार छः माह तक स्तनपान

एन.एफ.एच.एस -4 रिपोर्ट में लगातार छः माह तक स्तनपान के 47 जिलों के आंकड़े प्रस्तुत कियें गए हैं। बहुत ही रोचक तथ्य है कि शिशु को लगातार छः माह स्तनपान के मामले में प्रदेश के वे जिले अच्छी स्थिति में हैं जो जन्म के एक घंटे में स्तनपान के मामलों में पिछड़े हैं। प्रदेश के मंदसौर जिले सबसे अधिक 95.1 प्रतिशत बचों को लगातार छः माह तक माँ का दूध मिलता है। दूसरे स्थान पर नरसिंहपुर (84.3%), तीसरे स्थान पर सीधी (72.7%) चोथे स्थान पर रतलाम (72.3%) और पांचवे स्थान पर धार (72.1%) हैं। वही जो पांच पिछड़े जिले हैं उनमे ग्वालियर (26.6%) अशोक नगर (32.2%),भिंड (33.3%), डिंडोरी(35.5%) और होशंगाबाद (36.5%) हैं। प्रदेश के सभी जिलों की स्थित परिशिष्ठ -4 में देखें। भोपाल,जबलपुर और इंदौर जिलों आंकडे उपलब्ध नहीं हैं।

भाग -2 चाइल्ड राइट्स ऑब्जर्वेटरी मध्य प्रदेश द्वारा शिशु स्तनपान पर किया गया अध्ययन के परिणाम

अध्ययन क्षेत्र- चाइल्ड राइट्स ऑब्जर्वेटरी मध्य प्रदेश द्वारा अक्टूबर से दिसम्बर 2016 तक प्रदेश के 23 जिलों में अध्ययन किया गया।(मैप-1)

अध्यन का उद्देश्य - प्रदेश में शिशु स्तनपान की स्थिति ,चुनौतियाँ और प्रभावित कारकों को जानना।

मेप -1 अध्ययन क्षेत्र

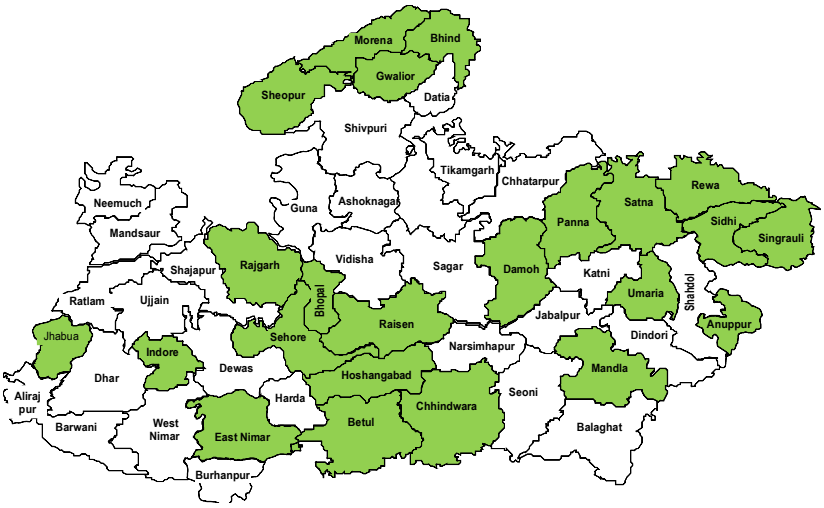

स्त्रोत -क्रोम्प फील्ड डाटा

अध्ययन के परिणाम

1 सेम्पल- प्रदेश के 23 जिलों में शेओपुर को छोड़कर प्रत्येक जिले में 30 जिन माताओं के छः माह से तीन बर्ष तक के बच्चें है। उन माताओं का साक्षात्कार किया जिनके बच्चों की उम्र 6 माह से 36 माह में बीच थी, कुल 720 माताओं का साक्षात्कार किया गया जिसमे 53 प्रतिशत शहरी और 47 प्रतिशत ग्रामीण थी। शेओपुर में 60 महिलाओं का साक्षात्कार किया।

2 उत्तरदाताओं की प्रोफाइल-

उम्र - कुल 720 माताओं जिनका साक्षात्कार किया उनमे से दो प्रतिशत महिलाओं की उम्र 19 बर्ष से कम थी, 91 प्रतिशत महिलाओ की उम्र 20-30 बर्ष के बीच की थीं वही सात प्रतिशत महिलाओं की उम्र 30 से अधिक थी।

शिक्षा - कुल 16 प्रतिशत बिना पढ़ी लिखी, 26 प्रतिशत पांचवी कक्षा, 23 प्रतिशत कक्षा आठवी , 23 प्रतिशत हाई या हायर सेकेंडरी और 12 प्रतिशत महिलाएं ग्रेजुएट या पोस्ट ग्रेजुएट तक पढ़ी थीं।

वर्ग - अनुसूचित जाति की 22 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति की 24 प्रतिशत, पिछड़ा वर्ग 39 प्रतिशत और सामान्य बर्ग की 15 प्रतिशत माताओं को अध्ययन में शामिल किया गया।

व्यवसाय- कुल 68 प्रतिशत गृहणी, 18 प्रतिशत मजदूरी करने वाली ,5 प्रतिशत नोकरी करने और 9 व्यवसाय से जुडी माताओं का साक्षात्कार किया गया।

3- जन्म के एक घटें के अन्दर शिशु स्तनपान और प्रभावित करने वाले कारक- यह सकारात्मक संकेत है कि प्रदेश 23 जिलों में 720 माताओं में से 86 प्रतिशत माताओं के शिशुओं को जन्म के एक घटे के अंदर माँ का दूध प्राप्त हुआ। सीधी में सबसे कम महज 47 प्रतिशत ,ग्वालियर और उमरिया में 60 प्रतिशत वहीं इंदौर, मडला ,मुरेना और रायसेन में साक्षात्कार की गई महिलाओं में से सभी महिलाओं के बच्चों को जन्म के एक घटे के अंदर माँ का दूध मिल पाया। जिलों में इस दर मेंर में अधिक अंतर होना भी अनेक प्रश्न खड़ा करतें हैं। चाइल्ड राइट्स ऑब्जर्वेटरी मध्य प्रदेश के अध्ययन में एक घंटें के अंदर स्तनपान की स्थिति राष्ट्रीय परिबार और स्वास्स्थ सर्वेक्षण -4 के विपरीत है। इसका कारण यह हे कि इन सभी जिलों में संस्था जे जुड़े जिला बाल अधिकार मंच के सदस्यों के द्वारा प्रयास किये जा रहें हैं।

संस्थागत प्रसव में भी यह सुनिश्चित नहीं होता की शिशु को जन्म के एक घंटे के अन्दर माँ का दूध मिले ,अध्ययन में शामिल जिलों में 11 प्रतिशत महिलाओं के शिशुओ को संस्थागत प्रसव, 29 प्रतिशत गैर संस्थागत प्रसव वहीं 12 प्रतिशत सामान्य प्रसव, 26 प्रतिशत सिजेरियन प्रसव की स्थिति में जन्म के एक घटें के अन्दर माँ का दूध नहीं मिल पाया। प्रदेश में 89 प्रतिशत संस्थागत प्रसव होने और उसमे 88 प्रतिशत सामान्य प्रसव की स्थिति में बच्चे के जन्म की स्थित में भी कई बच्चे जरूरी माँ के दूध से बंचित रह जाते हैं यह आश्चर्यजनक तथ्य है। (ग्राफ -2)

ग्राफ -2 शिशु को एक जन्म के एक घंटे में माँ का दूध नहीं मिला

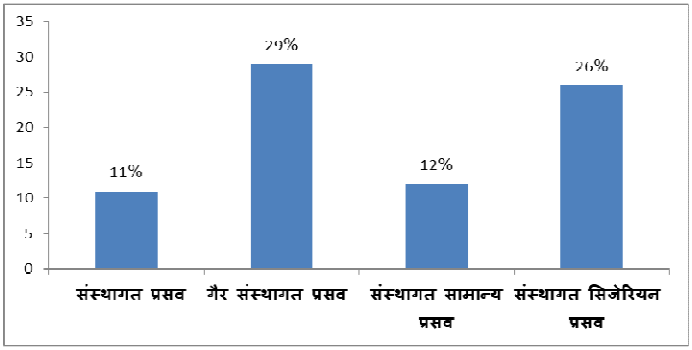

स्त्रोत -क्रोम्प फील्ड डाटा

4- जन्म के बाद लगातार छः माह तक शिशुओ को स्तनपान- अध्ययन में शामिल जिलो में शिशुओं 87 प्रतिशत माताओं के शिशुओं को जम के एक घंटे के अंदर स्तनपान कराया गया वहीं महज 65 प्रतिशत माताओं ने ही अपने बच्चों को लगातार छः माह तक शिशु स्तनपान कराया। सबसे कम अन्नुपुर, भिंड और सिंगरोली में जहाँ 40 प्रतिशत से कम महिलाओं ने अपने बच्चों को लगातार छः माह तक स्तनपान कराया। वहीं छिंदवाडा,दमोह और होशंगाबाद जिलों में शत प्रतिशत माताओं ने अपने बच्चों को लगातार छः माह तक शिशु स्तनपान कराया। अध्ययन में महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया की शहरी और ग्रामीण क्षेत्र इस दर में कोई अंतर नहीं है।

5 स्तनपान न करने के कारण- अध्ययन में शामिल 50 प्रतिशत महिलाओं ने अपने काम की वजह से स्तनपान नहीं करा पायीं। वहीं 20 प्रतिशत महिलाओं को इसकी जानकारी नहीं होने के कारण, 15 प्रतिशत बीमार होने की बजह से अपने शिशु को स्तनपान नहीं कराया वे उस दौरान निमोनिया,मलेरिया,सर्दी,जुकाम,पेट दर्द डायरिया,मितली आदि से पीड़ित थी जबकि इन बिमारियों में भी माताएं अपने शिशु को स्तनपान करना जारी रख सकती हैं। वहीं 15 प्रतिशत महिलाओं ने बिभिन्न भ्रान्तियों के कारण अपने बच्चों को स्तनपान नहीं कराया जिसमे बच्चे को ऊपरी आहार न देने दे बच्चे में कमजोरी, बीमार रहने, जल्दी बजन बढ़ने और मौत का खतरा आदि होना था।

6-जन्म के बाद बच्चों को ऊपरी चीजें और आहार- यह विशेषज्ञों द्वारा सलाह दी जाती है कि बच्चों को छः माह की उम्र के बाद ही अर्द्ध ठोस पदार्थ देना चाहिए। अध्ययन में शामिल जिलों में 36 प्रतिशत महिलाओं ने अपने बच्चों को ऊपरी चीजें और आहार छः माह से पहले देना शुरू किया। इसमे दो प्रतिशत महिलाओं ने तो बच्चों को घूटी,पानी, शहद और ऊपरी दूध के रूप में शिशु के जन्म के दिन ही उपरी आहार देना शुरू कर दिया। इसके साथ ही 16 प्रतिशत महिलाओं ने जन्म के एक माह के अन्दर उपरी दूध और दाल का पानी देना शुरू कर दिया। वहीँ 18 प्रतिशत महिलाओं ने उपरी आहार के रूप में दलिया,खिचड़ी,रोटी और चाबल जैसे ठोस आहार को तीन से छः माह के दौरान ही देना शुरू कर दिया। यदि उपरी आहार छः माह से कम उम्र में दिया जाता है तो इसमे बच्चों को डायरिया होने का खतरा रहता है। देश में बच्चों की प्रमुख कारणों में डायरिया दूसरी सबसे बड़ा कारण है। अध्ययन के ऊपरी आहार के तथ्य तालिका 2 में दर्शाए गए हैं।

तालिका -2 बच्चों को उपरी आहार

	प्रतिशत
जन्म वाले दिन	2.00
जन्म से एक माह के अंदर	16.00
जन्म से एक से तीन मन के दौरान	5.00
तीन से छः माह के दौरान	13.00
छ माह के बाद	64.00

	100.00

स्त्रोत -क्रोम्प फील्ड डाटा

7-कामकाजी महिलाओं के लिए स्तनपान एक चुनौती

अध्ययन में शामिल महिलाओं में से 32 प्रतिशत महिलाओं कामकाजी थीं जिनमे से , 18 प्रतिशत मजदूरी करने वाली ,5 प्रतिशत नोकरी करने और 9 व्यवसाय से जुडी थी। इन कामकाजी महिलाओं में से 57 प्रतिशत महिलाओं ने प्रसव के एक माह के अंदर, 32 प्रतिशत महिलाओं ने 1 से 3 माह के अंदर वहीं 9 प्रतिशत महिलाओं ने 3 से छ; माह के अंदर ही अपने कार्य पर जाना शुरू कर दिया। ऐसी महज 2 प्रतिशत ही महिलाएं थी जिनने प्रसव के बाद 6 माह बाद काम करना शुरू किया ।(ग्राफ-3)

ग्राफ -3 कामकाजी माताओं के द्वारा प्रसूति के बाद काम पर जाने की अबधि

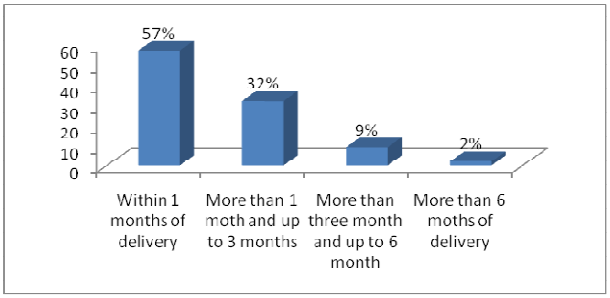

श्रोत -क्रोम्प फील्ड डाटा

कामकाजी महिलाओं के लिए शिशुओं को स्तनपान कराना एक चुनौती है, अध्ययन में तथ्य भी सामने आया कि महज 12 प्रतिशत महिलाएं ही अपने शिशुओ को कार्यस्थल पर ले गई बाकी 88 प्रतिशत महिलाएं अपने बच्चों को बड़े बच्चों,परिबार के सदस्यों के पास, पडौस में देखभाल के लिए छोड़कर गई। कुल कामकाजी महिलाओं में से महज चार प्रतिशत महिलाओं ने अपने बच्चों को देखभाल के लिए झूलाघर में छोड़ा। सामान्यत: चौवीस घंटें में बच्चे को 8 से 10 बार स्तनपान कराना चाहिए, अध्ययन में यह तथ्य भी सामने आया कि 42 प्रतिशत कामकाजी महिलाएं अपने बच्चों को इस अबधि में 8-10 बार स्तनपान करतीं हैं। गृहणी महिलाओं में भी यह दर 27 प्रतिशत है जिसके कारण घर के कामकाज में व्यस्तता है।

8- शिशु स्तनपान की स्थिति में सुधार के चाइल्ड राइट्स ऑब्जर्वेटरी मध्य प्रदेश की पहल

हाल ही में संस्था द्वारा बच्चों से सम्बंधित सतत विकास के लक्ष्यों को हासिल करने में पंचायतों की भूमिका को लेकर खंडवा और रायसेन जिले में 40 से अधिक पंचायत और स्थानीय निकाय के प्रतिनिधियों का छमताबर्धन प्रशिक्षण का आयोजित किया था। प्रशिक्षण में प्रतिनिधियों ने अपने पंचायतों

और वार्डों से सम्बंधित बच्चों की शिक्षा,पोषण और स्वास्थ में आने वाली चुनौतियों को साझा किया गया। खंडवा जिले की ग्राम पंचायत की रेखा बाई, ग्राम पंचायत लागोटी ने बताया कि ग्राम पंचायत में माताओ को यह जानकारी नहीं है कि नवजात शिशु को जन्म के समय एक घंटें के अन्दर केबल माँ का दूध ही देना चहिये उन्होंने यह भी बताया है कि शिशु को लगातार छः माह तक केबल माँ का दूध मिले ऐसा विल्कुल भी नहीं होता। स्वयं ने भी अपने बच्चों को न जन्म के एक घंटे के अन्दर और न ही लगातार छः माह तक केबल माँ का दूध दिया। लगभग सभी प्रतिनिधियों ने बताया कि बच्चों शिक्षा,पोषण और स्वास्थ विषय पर कोई विशेष पहल नहीं की। प्रतिनिधि कभी आशा,आगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और ए.एन.एम से कभी उनके कार्यों के बारे में कोई जानकारी नहीं ली। वे केबल इन केन्द्रों पर कभी कभार भवन सम्बंधित समस्यायों के लिए दौरा करतें हैं। बच्चों की शिक्षा,पोषण और स्वास्थ विषय पर अगले छः माह केलिए कार्य योजना योजना तैयार की है। जिसमे निम्न बिन्दुओं को शामिल किया है।

- सभी ग्राम पंचायतें अपने सम्बैधानिक जिम्म्मेदारियों के तहत बच्चों के स्वास्थ, पोषण और शिक्षा से सम्बंधित कार्य करेंगी।
- प्रतिनिधी अपने क्षेत्र में कार्यरत आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं,आशा और एन.एन,एम के कार्यों की समीक्षा बैठक भी करगें। समीक्षा में टीकाकरण,परिवार परामर्श,कुपोषण और स्तनपान आदि विषय रहेगें।
- क्रोम्प सभी प्रतिभागियों को बच्चों के स्वास्थ,पोषण और शिक्षा से सम्बंधित योजनाओ की जानकारी एक मेनुअल तैयार कर उपलब्ध कराएगी।
- पंचायतें शाला त्यागी किशोर बालिकाओ के पालकों से संपर्क कर स्कूल में पुन: प्रवेश दिलाएगी।
- जो बालिकाएं खासकर जो 10 वी और 12 वी में प्रायवेट परीक्षा देना चाहती है उनके लिए जिला योजना समिति की सदस्य जन प्रतिनिधियों से संपर्क कर फीस की व्यवस्था कराएगी।
- प्रतिनिधि ग्राम पंचायत के स्कूल, स्वास्थ केंद्र और आगनबाड़ी से सम्बंधित मुद्दों को मीडिया के माध्यम से भी उठायेगे इसके अलावा सी. एम हेल्प लाइन पर शिकायत दर्ज करायेगे।
- मुद्दों को उठाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करेंगें।
- स्थानीय समाज सेवी संगठन स्पंदन दो ग्राम पंचायतों को गौद लेगी ताकि पंचायतों को बाल मित्र पंचायत बनाया जा सके।
- क्रोम्प सभी पंचायतों को भारत सरकार और राज्य सरकारों के पुरुस्कारों की जानकारी और तकनीकी मदद प्रदान करेगा।
- बैठक की रिपोर्ट तैयार कर सभी प्रतिभागियों से साझा करेगे और जिला स्तर पर शिक्षा एवं स्वास्थ विभाग के अधिकारियों को भी देंगे।
- आपस में फ़ोन के माध्यम से सतत संपर्क करते रहेगें।

इस बर्ष चाइल्ड राइट्स ऑब्जर्वेटरी पंचायत प्रतिनिधियों के साथ मीटिंग अगस्त और सितम्बर माह में राजगढ़ और सीहोर जिलों भी आयोजित करेगा।

9-अध्ययन के निष्कर्ष

1 देश में मध्य प्रदेश शिशु स्तनपान में बहुत निचले पायदान पर है,प्रदेश के उन जिलों में शिशु को एक घंटें में बच्चों को माँ का दूध नहीं मिल पाता जहाँ मातृत्व स्वास्स्थ और शिशु देखभाल की बहतर सेवाएं दी जातीं हैं। इन जिलों में प्रमुख रूप से भोपाल ,इंदौर ,ग्वालियर,उज्जैन और रतलाम जैसे जिले हैं।

2-संस्थागत और सामान्य प्रसव के बाबजूद शिशु को जन्म के एक घंटे में माँ का दूध न मिलना पूरी व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है। इस अध्ययन ने यह सामने आया है कि जिन माताओं का संस्थागत प्रसव हुआ बाबजूद इसके 11 प्रतिशत माताओं के बच्चों को एक घंटे में माँ का दूध नहीं मिला। दूसरा जिन माताओं का सामान्य प्रसव हुआ ऐसी माताओं के 12 प्रतिशत और जिन माताओं का सिजेरियन प्रसव हुआ ऐसी 26 प्रतिशत माताओं के शिशुओं को जन्म के एक घंटे में माँ का दूध नहीं मिला।

3- बर्ष 1975 से देश में एकीकृत बाल योजना संचालित है जिसमे बर्तमान में आगनवाडी केन्द्रों के माध्यम से छ सेवाएं दी जातीं हैं। इसमे पोषण से जुडी दो मुख्य सेवाएं पहली पूरक पोषण आहार और दूसरी पोषण स्वास्थ शिक्षा है। प्रदेश में बर्तमान में एक हजार जनसँख्या पर एक आंगनवाडी केंद्र और 97,135 आंगनवाडी केंद्र संचालित हैं। परन्तुं इन केन्द्रों के माध्यम से यह जानकारी प्रसूति माताओं और उनके परिवार तक नहीं पहुँच पायी है कि शिशु के जन्म के छः माह बाद ही ऊपरी आहार देना चाहिए। अध्ययन में यह तथ्य सामने आया 34 प्रतिशत माताएं अपने शिशुओं को जन्म से छः माह पूर्व ही उपरी आहार देना शुरु कर देती हैं। राष्ट्रीय परिबार और स्वास्थ सर्वे 2015-16 के आंकडे और चोकने वालें हैं जिसमे उल्लेख है की प्रदेश में 93.1 प्रतिशत 6-23 माह के शिशुओं को पर्याप्त आहार नहीं मिल पाता है। गाणना में यह संख्या लगभग 12 लाख 85 हजार है।

4- भारत सरकार के स्वास्थ मंत्रालय की की "ग्रामीण स्वास्थ सांख्यिकी रिपोर्ट 2014 के अनुसार मध्य प्रदेश में दो हजार से अधिक सरप्लस ANM पदस्थ हैं जो टीकाकरण, परिबार परामर्श और स्तनपान जागरूकता के कार्य में बहुत महत्ब्पूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्तनपान की जानकारी देने में आशा कार्यकर्त्ता भी बहुत महत्पूर्ण निभाती हैं, प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रो में पदस्थ 64 हजार से अधिक आशा कार्यकर्त्ता पदस्थ हैं जिनकी कई राउंड की ट्रेनिंग भी हो चुकी है। प्रदेश में शिशु स्तनपान से बंचित बच्चों का रहना इनकी योग्यता और सरकार द्वारा दिए जा रहे पशिक्षण पर भी प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है।

5- माताओं की शिक्षा छ माह तक लगातार शिशु स्तनपान में महत्पूर्ण भूमिका निभा सकती है परन्तुं जो महिला पढ़ी लिखी नहीं हैं या वे जो कम से कम हाई स्कूल या हायर सेकेंडरी तक शिक्षित हैं में ग्रेजुएट महिलाओं की तुलना में यह दर अधिक है। यह भी तथ्य सामने आया की कामकाजी महिलाओं की तुलना में गृहणी अधिक समय तक स्तनपान कराती हैं।

6- जागरूकता के अभाव और शिशु स्तनपान न कराने के कारण कुपोषण बढ़ रहा है और बच्चों की असमय मौत हो रहीं हैं। स्तनपान की दर में कमी और जागरूकता का आभाव बच्चों के स्वास्थ विपरीत रूप से पड़ रहा है इसके साथ ही शिशु दुग्ध और आहार बनाने बाली प्रायवेट कंपनियों को मुनाफा हो रहा है। लेंसेट रिपोर्ट 2016 के अनुसार भारत में शिशु दुग्ध और आहार का बाजार दुनिया में चीन के बाद सबसे बड़ा है। यह और भी महत्ब्पूर्ण तथ्य है कि शिशु दुग्ध और आहार बानाने बाली कंपनियां देश के शिशु दुग्ध और आहार सम्बंधित क़ानून के प्रबधानों का उल्लंघन करती हैं।

7- तमाम प्रयासों के बाबजूद प्रदेश मे शिशु देखभाल और मातृत्व अवकाश का लाभ का कामकाजी माताओं को नहीं मिल पा रहा है। जिसके चलते माताएं अपने बच्चों को समय पर और पर्याप्त मात्र। में स्तनपान नहीं करा पा रहें हैं।

8- शिशु स्तनपान और पोषण आहार सम्बंधित मुद्दों पर पंचायत प्रतिनिदियों की कोई भूमिका नहीं रहती।

संदर्भ

http://www.who.int/nutrition/events/2016_bfhi_congress_presentation_latestscience_nemat.pdf?ua=1

http://www.hindustantimes.com/india-news/1-2-million-child-deaths-that-india-could-have-prevented/story-fqjt5vL8B3pfSxtaFobCiO.html

http://mpwcdmis.gov.in/DataEntryAasr.aspx

The Lancet Breastfeeding Series on breastfeeding practices

http://www.hindustantimes.com/bhopal/madhya-pradesh-government-hikes-child-care-leave-for-women-but-forgets-crusader/story-yUrcPIbNjI9fuLUfylBHeJ.html

http://brandequity.economictimes.indiatimes.com/news/business-of-brands/baby-food-industry-unethically-market-to-mothers-in-india-study/55805305

WHO/breastfeeding.http://www.who.int/entity/child_adolescent_health/topics/prevention_care/child/nu trition/breastfeeding/en.Accessed 14 Oct, 2009.

http://worldbreastfeedingweek.org/2016

तीन बर्ष तक के बच्चो को जन्म के एक घंटे में माँ दूध-2015-16

क्रमांक	राज्य	तीन बर्ष तक के बच्चो को जन्म के एक घंटे में माँ दूध(%)
1	Mizoram	70.2
2	Odisha	68.6
3	Sikkim	66.5
4	Manipur	65.4
5	Puducherry	65.3
6	Assam	64.4
7	Goa	60.9
8	Meghalaya	60.6
9	Arunachal Pradesh	58.7
10	Maharashtra	57.5
11	Karnataka	56.4
12	Tamil Nadu	54.7
13	Lakshadweep	54.3
14	Kerala	53.3
15	Nagaland	53.2
16	Daman & Diu	52.3
17	Gujrat	50
18	Dadra & Nagar Haveli	47.8
19	West Bengal	47.5
20	Chhattisgarh	47.1
21	Jammu & Kashmir	46
22	Tripura	44.4
23	Haryana	42.4
24	Andaman & Nicobar	41.9

25	Himachal Pradesh	41.1
26	Andhra Pradesh	40.1
27	Telangana	37.1
28	Bihar	34.9
29	**Madhya Pradesh**	**34.5**
30	Chandigarh	33.5
31	Jharkhand	33.2
32	Panjab	30.7
33	NCT Delhi	29.1
34	Rajasthan	28.4
35	Uttarakhand	27.8
36	Uttar Pradesh	25.2
	India	41.6

परिशिष्ठ--2

बच्चों को लगातार छः माह तक माँ का दूध- 2015-16

क्रमांक	राज्य	बच्चों को लगातार छः माह तक माँ का दूध (%)
1	Andaman & Nicobar	66.8
2	Andhra Pradesh	70.2
3	Arunachal Pradesh	56.5
4	Assam	63.5
5	Bihar	53.5
6	Chandigarh	N/A
7	Chhattisgarh	77.2
8	NCT Delhi	49.8
9	Dadra & Nagar Haveli	72.7
10	Daman & Diu	N/A
11	Goa	N/A
12	Gujrat	55.8
13	Haryana	50.3
14	Himachal Pradesh	67.2
15	Jammu & Kashmir	65.4
16	Jharkhand	64.8
17	Karnataka	54.2
18	Kerala	63.1
19	Lakshadweep	55
20	Madhya Pradesh	58.2
21	Maharashtra	56.6
22	Manipur	73.6
23	Meghalaya	35.8
24	Mizoram	60.6
25	Nagaland	44.5
26	Odisha	65.6
27	Panjab	53
28	Puducherry	45.5
29	Rajasthan	58.2
30	Sikkim	54.6
31	Tamil Nadu	48.3
32	Telangana	67.3
33	Tripura	70.7

34	Uttar Pradesh	41.6
35	Uttarakhand	51
36	West Bengal	52.3
	India	54.9

NFHS-4

परिशिष्ठ--3

प्रदेश के जिलों में शिशु को जन्म के एक घंटें के अंदर माँ का दूध

	जिले	**प्रतिशत**
1	Shahdol,	56.6
2	Mandla	53.0
3	**Balaghat**	**52.2**
4	Sidhi	49.3
5	Betul,	49.2
6	Jabalpur	49.2
7	Katni	47.0
8	Vidisha	46.6
9	Damoh,	46.5
10	Seoni,	46.3
11	Rewa	44.8
12	Bhind,	44.1
13	Seopur	44.0
14	Anuppur	43.8
15	Burhanpur	42.2
16	Raisen	41.9
17	Shivpuri,	41.9
18	Guna	41.0
19	Morena	38.5
20	Chhatarpur	37.9
21	Chhindwara	37.4
22	Umaria	37.2
23	Dindori	36.8
24	Hoshangabad	36.7
25	Mandsaur,	36.4
26	Rajgarh	35.5
27	Barwani	34.8
28	Singrauli	33.5
29	Satna	33.0
30	Ashoknagar	32.8
31	Tikamgarh,	32.3
32	Datia	32.0

33	Panna	32.0
34	Sehore	31.1
35	Narsimhapur	30.9
36	Khandwa	30.6
37	Harda	30.3
38	Gwalior	26.9
39	Alirajpur	25.5
40	Sagar	25.5
41	Dewas	25.3
42	Sajapur	22.7
43	Indore	21.9
44	Neemuch	21.4
45	Jhabua,	21.0
46	Dhar	20.9
47	Ratlam	19.1
48	Ujjain,	19.0
49	Bhopal	18.3
50	Khargone	17.8

NFHS-4

परिशिष्ठ-4

शिशु को लगातार छः माह तक स्तनपान

क्रमांक	**जिले**	**प्रतिशत**
1	Mandsaur,	95.1
2	Narsimhapur	84.3
3	Sidhi	72.7
4	Ratlam	72.3
5	Dhar	72.1
6	Katni	72
7	Vidisha	71.7
8	Barwani	71.4
9	Shivpuri,	69.9
10	Damoh,	69.6
11	Chhatarpur	68.9
12	**Balaghat**	**67.6**
13	Mandla	66.5
14	Dewas	64.7
15	Seoni,	64.6
16	Datia	63.9
17	Seopur	63.5
18	Khargone	62.8
19	Anuppur	61.3
20	Indore	61.3
21	Chhindwara	60.8
22	Sagar	60.4
23	Neemuch	60.3

24	Singrauli	59.8
25	Tikamgarh,	59.8
26	Alirajpur	58
27	Ujjain,	57.6
28	Jhabua,	55.8
29	Satna	55.7
30	Panna	55.5
31	Sajapur	53.9
32	Guna	52.5
33	Raisen	52.4
34	Rajgarh	51.4
35	Harda	51.2
36	Jabalpur	49.2
37	Burhanpur	48.7
38	Rewa	46.3
39	Khandwa	46.1
40	Sehore	43.1
41	Umaria	36.9
42	Morena	36.6
43	Hoshangabad	36.5
44	Dindori	35.5
45	Bhind,	33.3
46	Ashoknagar	30.2
47	Gwalior	26.4